→ समस्त जीव मृदा से ही पोषक तत्वों को ग्रहण करते हैं अतः मृदा मंडल को जैविक पट्टी कहा जाता है।

मृदा निर्माण को प्रभावित करने वाले कारक

- जनक / मूल-चट्टान
- जलवायु
  - तापमान व वर्षा
- उच्चावच
- समय
- ह्यूमस / जैव पदार्थ

Geography by Amit Shree sir

Soil Classification
मृदा वर्गीकरण
⇒ प्रथम भारतीय मृदाओं के वर्गीकरण का प्रयास वर्ष 1893 में वॉयलर द्वारा किया गया तथा लीदर महोदय ने इसे संशोधित कर 1898 में नया वर्गीकरण प्रस्तुत किया।
⇒ स्वतंत्रता के पश्चात् S.P. रॉय द्वारा किये गये पर्यवेक्षण तथा अनुसंधान के आधार पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा भारत की मिट्टियों को 8 मुख्य प्रकारों तथा 27 उपप्रकारों में विभाजित किया।
Geography b

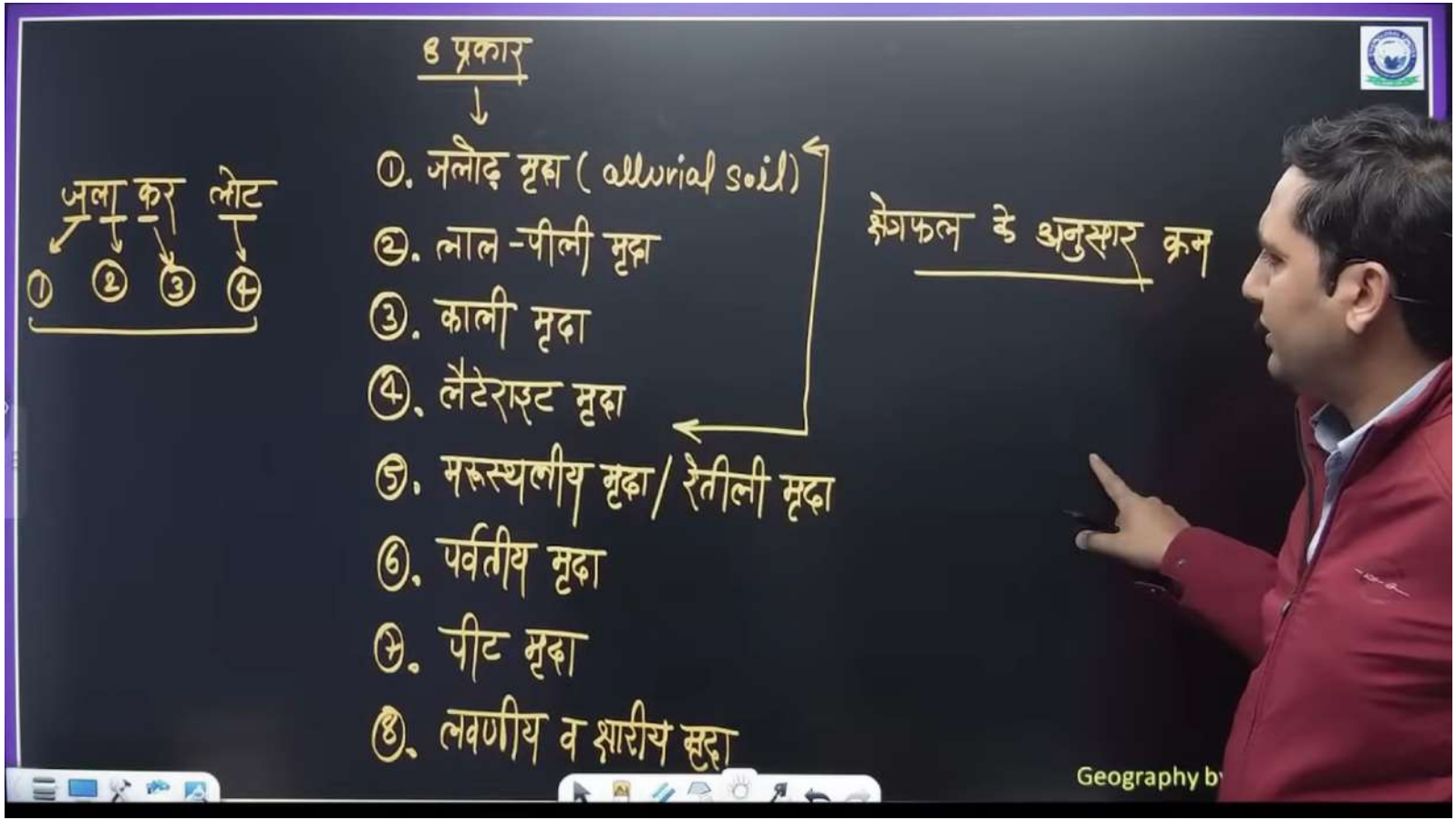

## 8 प्रकार

जला कर लौट → ① ② ③ ④

1. जलोढ़ मृदा (alluvial soil)
2. लाल-पीली मृदा
3. काली मृदा
4. लैटेराइट मृदा
5. मरूस्थलीय मृदा / रेतीली मृदा
6. पर्वतीय मृदा
7. पीट मृदा
8. लवणीय व क्षारीय मृदा

क्षेत्रफल के अनुसार क्रम

Geography by

24

| जलवायुवीय दशाएँ | विकसित मृदा |
| --- | --- |
| ①. उच्च ताप व उच्च वर्षा ⇒ | लैटेराइट मृदा |
| ②. उच्च ताप व निम्न वर्षा ⇒ | रेतीली मृदा / मरु॰ मृदा |
| ③. निम्न ताप व उच्च वर्षा ⇒ | पीट या दलदली मृदा |

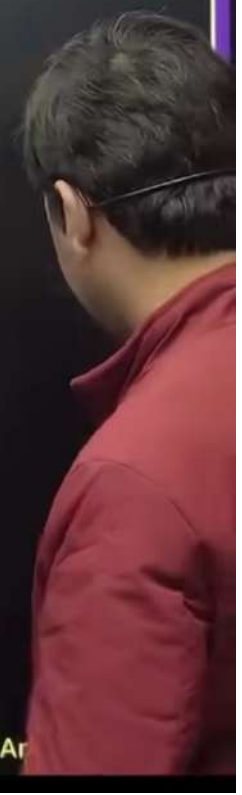

Geography by Ar

सबसे मोटे कण :- रेत (sand) -

थोड़े कम मोटे कण :- गाद (silt) -

सबसे बारीक कण :- मृत्तिका (clay) -

} समान मात्रा में होते हैं तो ऐसी मृदा दोमट (loamy) कहलाती है।

Geography by Amit Shree sir

(Alluvial soil) → रंग :- हल्का भूरा राख के समान

1. **जलोढ़ मृदा** :- अन्य नाम = काँप व कछारी

- → **विकास** :- नदियों द्वारा बहाकर लाये गये अवसाद के जमाव से
- → भारत में लगभग 43% भू-भाग पर विस्तृत है!
- → 2 प्रकार :- खादर व बाँगर
  - खादर ↓ नवीन जलोढ़
  - बाँगर → पुरानी जलोढ़
- → कमी :- N, P व ह्यूमस ; अधिकता :- पोटाश व चूना

Geography by A

विस्तार :- उत्तरी विशाल मैदान, तटीय मैदान, पूर्वी राज० के रास्ते गुजरात तक

② लाल-पीली मृदा :-

→ निर्माण/विकास :- प्राचीन आग्नेय व कायान्तरित चट्टानों के अपक्षय के परिणामस्वरूप

→ यह अत्यधिक निक्षालित मृदा (Leached soil)

→ निक्षालन/लीचिंग :- मृदा की ऊपरी परत से अघात्विक खनिजों के वर्षा जल के साथ घुलकर निचली परत में चले जाने से ऊपरी परत में धात्विक तत्वों की अधिकता हो जाती है इसे ही निक्षालन/लीचिंग कहा जाता है।

Geography by Amit